मासिक पत्रिका अक्तूबर 2013

"सबसे प्रीति-पूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए"-महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश -1 (पंजी.)

ARYA SAMAJ KAILASH-GREATER KAILASH-I (Regd.) Regn. No. 3594/1968

New Delhi-110048 • Tel.: 29240762, 29230831 • E-mail : samajarya@yahoo.in

An ISO 9001:2008 Certified

इन्द्र सेन साहनी (प्रधान) | राजेन्द्र कुमार वर्मा (मंत्री) | प्रताप गुलियानी (कोषाध्यक्ष)

संसार सत्य है या असत्य है

संसार क्या है? क्या यह सत्य है या असत्य है? कहने को यह मोटी-सी बात है कि संसार दीखता है। इसकी वस्तुओं को हम छू सकते हैं पकड़ सकते हैं। यह पृथ्वी, इसमें कलकल रव करती बहने वाली नदियाँ, ऊँचे-ऊँचे आसमान को छूनेवाले पहाड़, सूर्य, चन्द्र, तारे-ये सब सत्य नहीं तो क्या असत्य है? च्वांज़े नाम का एक चीनी विचारक हुआ है। वह कहता था कि जब मैं सो गया तो मुझे स्वप्न आया कि मैं तितली हूँ, उड़ता-फिरता हूँ। स्वप्न में मैंने अपने से पूछा-क्या मैं च्वांज़े हूँ या तितली हूँ। स्वप्न में मैंने अपने से कहा-मैं च्वांज़े कैसे हो सकता हूँ? मैं तो उड़ रहा हूँ, फूल-से-फूल पर बैठता हूँ; मुझे भ्रम हो रहा है कि मैं च्वांजे हूँ; मैं तो तितली हूँ। स्वप्न में मैंने यह भी अपने से कहा कि कहीं ऐसा तो नहीं कि मैं सोते हुए भ्रमवश अपने को तितली समझ रहा हूँ? मैंने देखा कि नहीं मैं सपना नहीं ले रहा, मैं सचमुच तितली ही हूँ। सवेरे उठने पर मैंने देखा कि मैं तितली नहीं हूँ-मैं च्वांज़े हूँ।

च्वांज़े कहता है कि अब मेरे सामने प्रश्न यह है कि क्या मैं वास्तव में तितली हूँ और च्वांज़े होने का स्वप्न ले रहा हूँ? या वास्तव में च्वांज़े हूँ और तितली होने का स्वप्न लेता हूँ? इन दोनों बातों में सत्य क्या है?

2. वेदान्त संसार को असत्य मानता है -च्वांज़े ने तो सिर्फ़ सन्देह व्यक्त किया कि क्या यह संसार सत्य है या असत्य है? जो दीखता है उसे सत् माना जाय या असत् माना जाय? परन्तु वेदान्त तो कहता है कि संसार असत् है, मिथ्या है; ब्रह्म ही सत् है, संसार में सत् होने की भ्रान्ति हो रही है। रात को हम जा रहे हैं, रास्ते में रस्सी पड़ी; उसे हम साँप समझकर भाग खड़े होते हैं। ठीक इसी तरह इस असत् संसार में इसके सत् होने की हमें भ्रान्ति हो रही है। वेदान्ती तो च्वांज़े से एक कदम आगे निकल जाते हैं। वह तो संदेह की अवस्था तक पहुँचा था, वेदान्ती सन्देह से आगे निंकलकर संसार के असत् होने की घोषणा कर देते हैं।

3. विष्णु तथा लक्ष्मी (अलंकारिक) ने जानना चाहा कि क्या सत्य है-कहते हैं, विष्णु तथा लक्ष्मी जा रहे थे। दोनों इस बहस में पड़ गए कि संसार की माया सत्य है या भगवान् सत्य है। विष्णु जी कहने लगे-भगवान् सत्य है। लक्ष्मी कहने लगीं-संसार की माया सत्य है। दोनों ने तय किया कि संसार में जाकर ही इसकी परीक्षा की जाय कि दुनियावाले माया को सत्य मानते हैं या भगवान् को। दोनों में बाज़ी लगी कि भू-लोक में चलें, वहाँ एक सेठ ने बड़ा आलीशान मन्दिर बनाया है, भगवान् का भक्त है, मन्दिर के साथ महात्माओं के ठहरने के लिए धर्मशाला बनी है, धर्मशाला में एक कमरा है जिसमें ठहरने की सब सुविधाएँ हैं, विष्णु जी वहाँ जाकर ठहरें। अगर लक्ष्मी जी उन्हें सेठ द्वारा उस कमरे से निकलवा दें, तो समझा जायेगा कि माया सत्य है; अगर विष्णु जी को लक्ष्मी जी न निकलवा सकीं तो समझा जाएगा कि भगवान् सत्य है।

विष्णु जी अपना बोरिया-बिस्तर लेकर सेठ जी के यहाँ जा पहुँचे। बोले, भगत! हम एक मास का भगवद्-भजन करने के लिए तुम्हारी धर्मशाला में निवास करना चाहते हैं। सेठ ने सबसे अच्छा कमरा उन्हें भगवद्-भजन के लिए दे दिया। रात को भोजन आया। विष्णु जी ने कमण्डल में पानी लिया पत्तल पर खाना खाया और आनन्द से भजन करने लगे।

कुछ दिन बाद लक्ष्मी जी भगवा धारण किये वहीं पहुँचीं और उन्होंने भी एक मास रहकर भगवान् का भजन करने की बात कही। सेठ ने कहा-जो कमरा चाहिए उसमें विराजिए। लक्ष्मी जी ने सेठ से उसी कमरे की माँग की जिसमें विष्णु जी ठहरे हुए थे। सेठ ने कहा-इसमें तो एक महात्मा पहले से ठहरे हुए हैं। लक्ष्मी जी ने कहा-कोई बात नहीं, उन्हें निकाल दो, हम तो उसी में आसन जमायेंगे, अगले दिन चली जाऊँगी।

सेठ जी बोले-यह कैसे हो सकता है? भगवान् के ऐसे भगत के साथ हम ऐसा बर्ताव कैसे कर सकते हैं? लक्ष्मी जी ने कहा-कोई बात नहीं हम रात बरामदे में काट लेंगे। बस, उन्होंने बरामदे में डेरा डाल दिया। रात को खाना आया। लक्ष्मी जी ने अपने थैले में से सोने की एक तश्तरी निकाली। उसमें खाना

खाया और खाकर जैसे पत्तल फेंक देते हैं वैसे सोने की तश्तरी को फेंक दिया। सेठ देख रहा था। उसने कहा-यह क्या? आपने सोने की तश्तरी को फेंक दिया! लक्ष्मी जी सेठ से बोलीं-हम तो ऐसा ही करते हैं, रोज़ सोने की तश्तरी में खाना खाते हैं और उसे फेंक देते हैं। अब हम अपनी यात्रा में आगे जाएँगी।

यह सुनते ही सेठ जी के पेट में खुदबुद होने लगी। बोले-देवी जी, आप यहीं रहिए, उसी कमरें में विराजिए जिसमें आप ठहरना चाहती थीं। मैं उस साधू को अभी निकलवा देता हूँ। सेठ जी ने अपने नौकरों को आज्ञा दी कि उस साधु को बाहर निकालो, वहाँ इन देवी जी का आसन जमेगा।

विष्णु जी को जब निकाला जा रहा था, तब लक्ष्मी जी ने हँसकर कहा-क्यों, समझ पड़ गया? संसार में माया सत् है या भगवान् सत् है? तुम सत् हो या मैं सत् हूँ?

4. वैदिक संस्कृति का कहना है कि संसार सत्य भी है असत्य भी है : दो नाइटों का दृष्टान्त-एक ग्रीक कथानक है। दो नाइट दो दिशाओं से शस्त्रों से सुसज्जित चले आ रहे थे। दोनों के हाथ में भाले थे। चलते-चलते एक स्थान पर पहुँचे जहाँ एक ढाल एक खम्भे के साथ लटकी हुई थी। दोनों नाइटों में से एक ढाल के दायीं तरफ़ खड़ा था, दूसरा बायीं तरफ़ खड़ा था। नाइट लोग छोटी-छोटी बात पर लड़ मरा करते थे। दोनों में बहस छिड़ गई। एक कहने लगा, यह ढाल चाँदी की है, दूसरा कहने लगा सोने की है। दोनों ने भाले तान लिये, लड़ने को तैयार हो गए। इतने में वहाँ एक भला आदमी आया। उसने पूछा-लड़ाई किस बात पर है? वे बोले-यह कहता है कि यह ढाल सोने की है, मैं कहता हूँ चाँदी की है। पहला जिधर खड़ा था उधर से बोला-देखो, है न चाँदी की? दूसरा जिधर खड़ा था उधर से बोला-देखो, है न सोने की? असल में, एक तरफ़ से वह चाँदी की थी, दूसरी तरफ़ से सोने की थी। इस तीसरे व्यक्ति ने दोनों को पकड़ कर उनके स्थान बदल दिए। दायें खड़े को बायें और बायें खड़े को दायें खड़ा कर दिया। अब दोनों को समझ पड़ा कि ढाल एक तरफ़ से चाँदी की और दूसरी तरफ़ से सोने की थी-ढाल चाँदी तथा सोना दोनों की थी।

5. संसार सत् भी है, असत् भी है-अगर गहराई से देखा जाए, तो संसार सत् भी है, असत् भी है। संसार सत् है-यह तो मूढ़-से-मूढ़ व्यक्ति भी जानता है। यह दीखता है, इसमें हम सारे कारोबार करते हैं; असत् होता तो क्या दीखता? परन्तु दो बातें हैं जिनसे मालूम होता है कि यह असत् भी है। वे दो बातें क्या हैं?

(क) यह हाथ से निकल जाता है-संसार की धन-सम्पत्ति को हम कितना ही पकड़कर क्यों न रखें, समय आता है जब सब हाथ से निकल जाता है। मृत्यु के समय मनुष्य एक सुई को भी साथ नहीं ले जा सकता। कहते हैं सिकन्दर जिसे दुनिया-भर को जीत लिया था, मरते हुए कह गया कि जब उसका जनाज़ा निकले तो उसके दोनों खाली हाथ कफ़न के बाहर दिखाए जाएँ जिससे हर-किसी को मालूम हो कि जिस दुनिया को सब-कुछ समझकर हम इसमें रमे रहते हैं, यहाँ से चलते समय सब-कुछ छोड़कर चल देते हैं। वह संसार जिसे हम सत् मानकर जीते हैं, सारा-का-सारा असत् हो जाता है।

(ख) उपनिषद् तथा विज्ञान भी कहता है कि असली सत्ता इसकी नहीं, असली सत्ता उसकी है जो नहीं दीखता है-हम समझते हैं कि असली सत्ता इस संसार की है जो दीखता है, जिसे हम छूते हैं, जिसमें व्यवहार करते हैं।

मेरे हाथ में एक नारंगी है, इसमें क्या है? इसमें नारंगी की फाँकें हैं। फाँकों में क्या है? उनमें बीज हैं। बीजों को फोड़ें, इनमें क्या है? उनमें कुछ नहीं है-दीखता ही कुछ नहीं। असल में, उस कुछ नहीं में ही सब-कुछ है। छान्दोग्य (6, 12) में श्वेतकेतु के पिता उसे उपदेश देते हुए कहते हैं-वाट-वृक्ष का फल लाओ। इसे तोड़ो। क्या दीखता है? श्वेतकेतु ने कहा-कुछ नहीं दीखता। पिता ने कहा-जिसे तुम कुछ नहीं कहते हो उसी में वट का महान् वृक्ष पड़ा है।

हम समझते हैं कि हमें जो दीखता है वही सब-कुछ है। उपनिषद् कहते हैं कि जो नहीं दीखता वही सब-कुछ है, जो दीखता है वह तो न दीखनेवाले का कलेवर है।

विज्ञान भी यही कहता है। विज्ञान कहता है कि सृष्टि के प्रारम्भ में 'नेब्युला' (Nebula) था। इसी को वेद में कहा है- **'हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे'**-अग्रे, अर्थात् सृष्टि के निर्माण के समय हिरण्यगर्भ था, प्रकाशमय पुंज जिसे वैज्ञानिक 'नेब्युला' कहते हैं-वह था। नेब्युला तो भौतिक पदार्थ है। उसमें गति होने से ही तो सृष्टि का निर्माण हुआ। उसमें गति किसने दी? न्यूटन का सिद्धान्त यह है कि जो गतिहीन पदार्थ है उसमें भीतर से गति नहीं आ सकती; उसमें गति आएगी तो बाहर से आएगी। अगर मान लिया जाय कि किसी पदार्थ में गति हो रही है तो वह गति बनी रहेगी, रुक नहीं सकती, रुकेगी तो बाहर की किसी शक्ति या वस्तु के बीच में आ पड़ने से रुकेगी। मैटर एक ऐसी वस्तु है जिसमें गति आती भी है, जिसमें से गति चली भी जाती है। विज्ञान का ही प्रश्न है कि गतिहीन नेब्युला में शुरू-शुरू में गति कैसे आयी? नेब्युला के बने भौतिक पदार्थों में से गति चली कैसे जाती है?

गति भी वही दे सकता है जिसमें स्वयं गति नहीं होती। कीली नहीं घूमती तभी चक्की चलती है; कीली ही घूमने लगे तो चक्की नहीं घूम सकती; रथ की धुरी नहीं नहीं घूमती तभी रथ घूमता है। संसार में भी गति इसीलिए है क्योंकि इसे गति देनेवाले में गति नहीं है। वह अचल है तभी इसे चला रहा है।

इसी कारण उपनिषदों का कहना है, और विज्ञान से यह बात पुष्ट होती है कि जो-कुछ दीखता है वह सत्य नहीं है; सत्य वह है जो नहीं दीखता।

6. जो नहीं दीखता वह 'निरपेक्ष सत्' (Absolute existence) है; जो दीखता है वह 'सापेक्ष सत्' (Relative existence) है–उपनिषदों का कहना है कि संसार में 'सत्ता' के दो रूप हैं–निरपेक्ष–रूप तथा सापेक्ष–रूप। निरपेक्ष रूप तथा सापेक्ष–रूप का क्या अर्थ है?

उदाहरणार्थ, पानी को लें। पानी का उद्देश्य प्यास बुझाना है। यह पानी का सापेक्ष–रूप है–स्थूल रूप। परन्तु पानी ऑक्सीजन और हाइड्रोजन से बना है। यह पानी का निरपेक्ष–रूप है। पानी सत् है, परन्तु जब हम पानी को ऑक्सीजन तथा हाइड्रोजन के रूप में देखते हैं तब पानी असत् हो जाता है, ऑक्सीजन तथा हाइड्रोजन सत् हो जाते हैं। उस रूप में वे प्यास को नहीं बुझाते। इसी प्रकार यह भौतिक संसार सत् है, परन्तु जब इस संसार की उस शक्ति से तुलना की जाती है, जो इसमें जीवन का संचार करती है, तब वह शक्ति सत् तथा यह संसार असत् हो जाता है। उस हालत में संसार असत् क्यों हो जाता है? इसे ठीक–से समझने के लिए यह समझना जरूरी है कि संसार सत् क्यों है? संसार सत् इसलिए ही तो है क्योंकि यह हमें दीखता है। हमारे सामने दीवार है, यह हमें दीखती है, इसलिए यह सत् है। परन्तु अगर हम कॉस्मिक किरणों से देखें, तो दीवार नहीं दीखती, दीवार के पार की वस्तुएँ दीखने लगती हैं। हम इन्द्रियों से काम लेते हैं, इसलिए इन्द्रियों से जो ग्रहण किया जाता है उसे हम सत् कहते हैं; इन्द्रियों से जो नहीं ग्रहण किया जाता उसे हम असत् कहते हैं। सूर्य की किरणों के सात रंग हैं–लाल (Red) से शुरू होकर बैंजनी (Violet) तक सात रंग किरणों के माने जाते हैं। परन्तु ऐसा इसलिए है क्योंकि हमारी आँख की रचना इस तरह की है कि लाल रंग में प्रकाश की जितनी लहरें होती हैं उन्हीं को हम अपनी आँखों से पकड़ सकते हैं, उससे कम लहरोंवाले रंगों को नहीं पकड़ सकते। हमारी ज्ञानेन्द्रियों की जो सीमा है उसी से हम बंधे हैं, उससे ऊपर या नीचे की लहरों को हमारी ज्ञानेन्द्रियाँ नहीं पकड़ सकतीं। परन्तु क्या उनकी सत्ता नहीं है? अगर हम उन लहरों को पकड़ सकें तो उनकी अपेक्षा जिन रंगों को हम आज पकड़कर उन्हें सत् कहते हैं वे असत् हो जाएँ, जिन्हें नहीं पकड़ पा रहे वे सत् हो जाएँ।

क्रमशः

सितम्बर मास में प्राप्त दान राशिः–

नाम	राशि	नाम	राशि	नाम	राशि
श्री विजय गुप्ता	5100/–	श्री विद्या सागर सरीन	1100/–	श्रीमती वीना कश्यप	1000/–
श्रीमती प्रीति कोचर	5100/–	श्री विनोद आर्य	1100/–	डॉ. पुष्पा भार्गव	1000/–
श्रीमती विमला भाटिया	5000/–	श्रीमती कृष्णा मेहता	1100/–	श्रीमती सरीता सूद	750/–
श्रीमती कृतिका बहल	3100/–	श्रीमती सुशीला गुलाटी	1100/–	श्री देवन्द्र कुमार मग्गू	501/–
श्री अरुण बहल	3100/–	श्री दयानन्द मनचन्दा	1100/–	श्री वेद कुमार वेदालंकार	500/–
श्री देव राज कोहली	3100/–	श्री कोहली परिवार	1100/–	सुश्री मनीषा सिंह	500/–
श्री योगेश मुन्जाल	2200/–	श्री अजय गुलाटी	1100/–	आर्य समाज मस्जिद मोठ	500/–
श्री सुनील अबरोल	2100/–	श्री विजय भाटिया	1100/–	श्री रजमुन जुगन नाथ	500/–
सर्व सम्मान	2100/–	श्री सुभाष चन्द्र अमर	1100/–	श्रीमती सुधा गर्ग	500/–
श्रीमती उषा मारवाह	2100/–	श्री सुनील चोपड़ा	1100/–	श्री एस. विनोद खेरा	500/–
श्रीमती अंजली आर्या	2100/–	श्री एस.एस. ढींगरा	1000/–	आर्य समाज, जनकपुरी	500/–
श्री सुभाष चन्द्र मेहता	2100/–	श्रीमती कृष्णा सेठी	1000/–	श्री अशोक चोपड़ा	500/–
श्री आर.के. सुमानी	2000/–	श्री वेद प्रकाश वर्मा	1000/–	श्री अतुल मोंगा	500/–
श्री एस.सी. सक्सेना	2000/–	श्रीमती वीना कश्यप	1000/–	प्राची खेरा	500/–
श्री आर.के. तनेजा	1100/–	श्रीमती कमलेश पंगाशा	1000/–	सुश्री निशा शर्मा	500/–
श्री एम.एल. छाबड़ा	1100/–	श्रीमती रेणू शर्मा	1000/–	अरचना वीर	500/–

सितम्बर माह में पुरोहितों द्वारा एकत्रित धनराशि :

❖ श्री वेद कुमार वेदालंकार ₹ 8,600/– ❖ आचार्य वीरेन्द्र विक्रम ₹ ....

अक्तूबर 2013 मास में साप्ताहिक सत्संग

दिनांक	वक्ता विषय	
06	डा. शिव कुमार शास्त्री	'आत्मसमर्पण'
13	आचार्य वीरेन्द्र विक्रम	सत्यार्थ प्रकाश में क्रान्तिकारी विचार क्या है?
20	श्री वेद कुमार वेदालंकार	उपनिषद् की दृष्टि में 'विद्या' और 'अविद्या' क्या है?
27	श्री नरेश सोलंकी	भजन

स्मरण पत्र– कुछ समय पहले आपको आर्य समाज की ओर से एक पत्र भेजा गया था जिसमें समाज की वर्तमान व भविष्य की गतिविधियों के सम्बंध में आपके सुझाव व सम्मितियाँ आमन्त्रित की गई थी। आपसे पुनः निवेदन है कि अपने सुझाव अवश्य भेजें। उपयोगी व व्यवहारिक सुझावों को कार्यान्वित करने के लिये उचित विचार होगा।

वेद प्रचार सप्ताह–प्रतिवर्ष की भांति, आर्य समाज में वेद प्रचार सप्ताह 2 सितम्बर से 8 सितम्बर 2013 तक बड़े उत्साह से मनाया गया जिसमें उच्च कोटि के विद्वान, डा. धर्मवीर जी (परोपकारिणी सभा, अजमेर के मंत्री पद पर आसीन हैं) का प्रवचन सम्पूर्ण सप्ताह रहा। डा. धर्मवीर जी ने श्रोताओं से आध्यात्मिक व सामाजिक विषयों पर शंकायें आमंत्रित कर उनका युक्ति व तर्क से समाधान भी प्रस्तुत किया, इससे चर्चा और भी रोचक व दिलचस्प हो गई। उनके शिक्षाप्रद व ज्ञानवर्धक प्रवचनों से सब श्रोतागण लाभान्वित हुए।

7 सितम्बर को डा. उषा शर्मा का महिला सम्मेलन में यज्ञ, भजन एवं प्रवचन किया। उनका शुद्ध मंत्रोच्चारण बड़ा प्रभावशाली रहा, उनकी आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा का समस्त श्रोताओं ने बड़ी तन्मयता से श्रवण किया।

8 सितम्बर को मुख्य समारोह था। इस दिन विभिन्न आर्य समाज के महत्वपूर्ण विशेष आमन्त्रितं सज्जन उपस्थिति थे। श्री बृजमोहन मुंजाल मुख्य अतिथि तथा विशेष आमंत्रित श्री रामनाथ सहगल, ब्रह्मचारी श्री राजसिंह एवं श्री विनय आर्य (आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली प्रदेश) उपस्थित रहे।

इस आर्य समाज के संस्थापकों में से एक श्री देवराज कोहली जी का विशेष रूप से सम्मान किया गया। इनके अतिरिक्त श्रीमती सन्तोष मुंजाल एवं श्रीमती राजरानी घई का भी सम्मान किया गया।

डा. धर्मवीर जी, प्रो. महेश विद्यालंकार जी के प्रवचन हुए। आर्य शिशुशाला के बच्चों ने बड़े रोचक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। पूरे सप्ताह श्री नरेश सोलंकी के मधुर भजन हुए। समारोह के पश्चात् स्व. पं. सत्यदेव विद्यालंकार की स्मृति में श्रीमती अमृतपॉल के सौजन्य से प्रीतिभोज का आयोजन था।

सम्पूर्ण कार्यक्रम में आर्य समाज के दोनो पुरोहितों – पं. वेद कुमार वेदालंकार जी व आचार्य वीरेन्द्र विक्रम जी ने बड़ी कुशलता से संचालन किया।

आर्य समाज के सदस्य अधिकाधिक संख्या में सम्पूर्ण समस्त कार्यक्रम में सम्मिलित हुए व सहयोग दिया जिसका वे धन्यवाद के पात्र हैं।

MAHARSHI DAYANAND CHARITABLE MEDICAL CENTRE

Arya Samaj Kailash–Greater Kailash–I (Regd.), New Delhi-110048 Tel.: 29240762, 29247544

FREE DIABETES CAMP

3rd Thursday of Every month

Timings : 10:00 am to 1:00 pm

By

Dr. (Lt. Gen.) S.P. Kalra (MBBS, MD, FICP MN/AMS)